**M.A. IV SEM**

E-LECTURE 05

HISTORY OF INDIA (650-1206 A.D.)

**Dr. NANDANI PATHAK**

**SOS ARCHAEOLOGY DEPARTMENT**

**05.04.2020**

# राजपूतों की पराजय के कारण

राजपूत-काल बौद्ध-धर्म के पतन का काल था। इस धर्म का तान्त्रिक-धर्म से बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध हो गया था । इसका भिक्षुओं पर बड़ा प्रभाव पड़ा । कुमारिल तथा शंकराचार्य ने भी बौद्ध-धर्म का खण्डन करके उसे बड़ी क्षति पहुँचाई। विदेशी आक्रमणकारियों ने तो बौद्ध-धर्म को बिल्कुल नष्ट-भ्रष्ट कर दिया और वह अपनी जन्मभूमि में उन्मूलित-सा हो गया।

राजपुत-काल में जन-धर्म बड़ी हो अवनत दशा में था। इसका प्रचार दक्षिण भारत में सबसे अधिक था। इसे पश्चिम में चालुक्य राजाओं का संरक्षण प्राप्त था परन्तु बारहवीं शताब्दी में लिंगायत-सम्प्रदाय का प्रचार हो जाने से जैन-धर्म को बड़ी क्षति पहुँची । परन्तु जैन-धर्म का समूल विनाश न हुआ । यह धीरे-धीरे ब्राह्मण-धर्म के सन्निकट आता गया और आज भी अपने अस्तित्व को बनाये हुए है।

**साहित्य**-राजपूत काल में साहित्य की भी बड़ी उन्नति हुई । इस काल में संस्कृत की बड़ी उन्नति हुई और वही साहित्यिक भाषा थी। परन्तु संस्कृत के साथ साथ प्रान्तीय भाषाओं का भी विकास होता जा रहा था और हिन्दी, बंगला, गुजराती आदि भाषाओं का भी विकास होता जा रहा था । अनेक शिक्षा-संस्थाओं

की स्थापना भी इसी युग में हुई । विक्रमशिला नामक विश्वविद्यालय का विकास इसी युग में हुआ।

राजपूत राजा बड़े ही साहित्यानुरागी थे और वे साहित्यकारों के आश्रयदाता भी थे। कवियों तथा विद्वानों को दान तथा पुरस्कार देने में वे बड़े उदार तथा सहृदय थे। ऐसे अनेक राजा इस युग में हुए, जो स्वयं उच्चकोटि के विद्वान् तथा कवि थे। इसमें वाकपतिराज, मुंज, भोज, विग्रहराज आदि प्रधान हैं। राजपूत राजाओं के दरबार में अनेक कवियों को आश्रय प्राप्त था । कन्नौज के राजा महेन्द्रपाल के दरबार मैं राजशेखर नामक कवि था, जिसने प्राकृत भाषा में 'कपूर-मंजरी' नामक ग्रंथ लिखा था। बंगाल के राजा लक्ष्मणसेन के दरबार में जयदेव. नामक कवि को आश्रय प्राप्त था, जिसने 'गीतगोविन्द' नामक ग्रन्थ की रचना की। काश्मीर में कल्हण ने 'राज तरंगिणी' की और सोमदेव ने 'कथा-सरित-सागर' की रचना की। चारण कवियों में चन्दवरदाई का नाम अग्रगण्य है, जो राजा पृथ्वीराज चौहान के दरबार में रहते थे और जिन्होंने 'पृथ्वीराज रासो' नामक ग्रन्थ की रचना की थी। भवभूति इस काल के सबसे प्रसिद्ध नाटककार थे, जिन्होंने 'महावीर-चरित', 'उत्तर-रामचरित' तथा 'मालती माधव' नामक नाटकों की रचना की। कुमारिल भट्ट, शंकराचार्य तथा रामोनुजाचार्य इस काल के प्रसिद्ध दार्शनिक थे, जिन्होंने अपनी रचनाओं में तत्त्वों की विवेचना की। इस प्रकार राजपूत-युग यद्यपि प्रधानतः संघर्ष तथा युद्धों का युग था, परन्तु उनमें साहित्य की पर्याप्त उन्नति हुई।

**कला**-राजपूत राजा कला-प्रेमी थे। राजपूत-काल प्रधानतः युद्ध तथा संघर्ष का काल था अतएव राजपूत राजाओं ने आत्म-रक्षा के लिये अनेक सुदृढ़ दुर्गों का निर्माण करवाया। रणथम्भौर, चित्तौड़, ग्वालियर आदि के दुर्ग इसी काल में बने थे। राजपूत राजाओं को सुन्दर-सुन्दर भवन बनवाने का बड़ा शौक था। इन राजभवनों में ग्वालियर के मानसिंह का राजमहल, जयपुर का हवामहल तथा जयपुर के अन्य महल अत्यन्त प्रसिद्ध हैं । इस प्रकार इस युग में वास्तुकला की बड़ी उन्नति हुई।

राजपूत-काल में मन्दिरों का खूब निर्माण हुआ। इस काल में उत्तरी भारत में जो मन्दिर बने उसके शिखर बड़े ऊँचे तथा नुकीले हैं। इनमें अलंकार तथा सजा वट की अधिकता है, परन्तु सुदूर दक्षिण में रथ तथा विमान के आकार के मन्दिर बने हैं। अपेक्षाकृत सरल हैं। इस काल के बने हुए मन्दिरों में खजुराहो के मन्दिर, उड़ीसा में भवनेश्वर का मन्दिर, काश्मीर का मार्तण्ड-मन्दिर, अजन्ता के गुहा-मन्दिर, एलोरा का कैलाश-मन्दिर, आबू पर्वत पर स्थित जैन-मन्दिर, तंजौर, कांची, मथुरा आदि के मन्दिर प्रसिद्ध है।

मन्दिर के निर्माण के साथ-साथ इस कला में मूर्ति-निर्माण कला की भी उन्नति हुई । ब्राह्मण-धर्म के अनुयायियों ने शिव, विष्णु, शक्ति, सूर्य, गणेश आदि की मूर्तियों का, बौद्ध-धर्मावलम्बियों ने बुद्ध तथा बोधिसत्वों की मूतियों का और जैनियों ने तीर्थ करों की मूर्तियों का निर्माण कराया। चित्रकारी का भी कार्य उन्नत दशा में था। गायन. बादन, अभिनय तथा नृत्य-कला का भी इस युग में विकास हुआ।